# क्षति-पूर्ति

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

क्षतिपूर्ति

# क्षतिपूर्ति

## (भाषा की पुस्तकों में नारी-पुरुष असमानता का उन्मूलन)

डॉ0 इन्दिरा कुलश्रेष्ठ
परियोजना निदेशक

महिला शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

नवम्बर 1991
कार्तिक 1912-1913

म.अ.वि. 1 टी.आई.के.

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

सर्वाधिकार सुरक्षित

– प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी मशीनी, फोटो रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा इसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है ।

– इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा, उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी ।

– इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुदित है । रबड की मोहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा ।

मुख पृष्ठ : रीता चड्ढा

महिला अध्ययन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा प्रिंट ओ बाइण्ड 394 छत्ता लाल मियां दरियागंज द्वारा कम्पोज्ड एवं मुदित ।

## प्रस्तावना

नारी-पुरूष के बीच असमानता अथवा भेदभाव सहज ही किसी के मन में क्षोभ उत्पन्न कर सकता है । इस प्रकार के भेदभाव तथा उनके कार्यों के विरूद्ध प्रस्तुतीकरण से उत्पन्न त्रासदी का प्रभाव बच्चों, विशेष रूप से किशोर वय के बच्चों के मन-मानस पर पड़ता है, और यह त्रासदी उनके आचार व्यवहार, उनकी स्वयं के प्रति धारणा, उनके मनोविज्ञान आदि में स्पष्ट रूप से झलकती है । जब उन्हें जीवन के इस कटु सत्य का सामना करना पड़ता है, उनके सपने अचानक ही छिन्न-भिन्न हो जाते हैं । बारबार यह प्रश्न उनके मन में उठता है कि वे सभी तो एक ही जाति– मानव जाति–के सदस्य हैं, फिर उनके साथ अलग अलग तरह का व्यवहार क्यों किया जाता है ? क्या इसलिए कि उनमें से कुछ बालक हैं, तो कुछ बालिकायें हैं ? बारबार हमारे सामने यह प्रश्न सिर उठाकर खड़ा हो जाता है कि इस प्रकार के भेद-भाव पूर्ण व्यवहार से उनके मन-मानस को जो क्षति हो चुकी है, उसकी पूर्ति करना आवश्यक तो है, किन्तु कैसे ? हमें लगता है कि भेदभाव की इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए हमें बच्चों में उस समय से ही समानता की भावना का बीज बोना पड़ेगा जब वे मात्र शिशु होते हैं । इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए विद्यालयों से अच्छा और कौन सा स्थान हो सकता है ? विद्यालयों में ही वे अपना सबसे मूल्यवान समय व्यतीत करते हैं, अतः विद्यालयों को समाजीकरण का एक माध्यम मानकर चलना भी उचित ही होगा और विद्यालय इस उद्देश्य में सफल हो, इसके लिए हमें ऐसे पाठ्यक्रम, ऐसी पाठ्य पुस्तकों का निर्माण करना पड़ेगा जो भेदभाव रहित हो ।

प्रस्तुत पुस्तिका मूल्यांकन उपकरण की भूमिका के रूप में लिखी गई है । इसमें पाठ्य सामग्री के मूल्यांकन के मानदंड तथा मूल्यांकन कर्ताओं के लिए मूल्यांकन उपकरण का प्रयोग करने के लिए निर्देश दिये गए हैं । मूल्यांकन उपकरण को कई बार प्रयोग में लाने के उपरान्त अपने अनुभवों के आधार पर हमने इसको दुबारा कुछ घटा-बढ़ा कर लिखा है । इस उपकरण को विशेष तौर पर भाषा की पुस्तकों का मूल्यांकन करने के दृष्टिकोण से बनाया गया है । अपने इस नए प्रारूप में मूल्यांकन मानदंड अधिक विस्तार से लिखे गए हैं और नारी की शक्तिमत्ता तथा नारी की स्थिति से संबंधित अनेक मूल्यों को एक दूसरे से जोड़ दिया गया है ।

हमें आशा है कि इन सबको यदि एक साथ रखा जाए तो मूल्यांकनकर्ताओं को न केवल स्त्री-पुरुष असमानता के स्थलों के चुनने में आसानी होगी, वरन् वे इन भेदभावों को दूर करने के लिए उचित सुझाव भी दे सकेंगे । उनके सुझावों के आधार पर बालिकाओं में स्वयं अपनी महत्ता समझने और अपनी क्षमताओं को पहचानने की सामर्थ्य उत्पन्न हो सकेगी। बच्चों में आत्म-सम्मान की भावना तो जागृत होगी ही, वे एक दूसरे का मानव के रूप में सम्मान करना भी सीख जाएंगे- और यदि ऐसा सम्भव हुआ, तो हम समझेंगे कि हमारा प्रयास सार्थक हुआ है।

इन्दिरा कुलश्रेष्ठ

अक्तूबर, 1989



अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| प्रस्तावना | | इन्दिरा कुलश्रेष्ठ |
| अध्याय 1 | : | मूल्यांकन मानदंड |
| अध्याय 2 | : | मूल्यांकन उपकरण निर्देशिका |
| परिशिष्ट | : | भाषा सम्बन्धी पाठ्य सामग्री को जांचने के लिए मूल्यांकन उपकरण |
| | : | प्रतिपाठ मूल्यांकन पृष्ठ |

# अध्याय ।

## मूल्यांकन मानदण्ड

## भाषा की पुस्तकों में नारी-पुरूष असमानता का उन्मूलन: मूल्यांकनमानदंड

### 1. भूमिका

पाठशालाओं में बच्चों को जो साहित्य पढ़ाया जाता है उसका उद्देश्य मात्र पढ़ने-लिखने में उनकी योग्यता बढ़ाना और सामान्य ज्ञान या जानकारी में वृद्धि करना नहीं हो सकता । उसे यथातथ्य और मूल्यपरक होना चाहिए । पाठ्य सामग्री का छात्रों के मन-मस्तिष्क पर तुरन्त प्रभाव पड़ता है । मेरा विश्वास है कि पाठ्य-पुस्तकों की विषयवस्तु छात्रों के रूख को बदल सकती है । सकारात्मक प्रस्तुतिकरण से बच्चों का दृष्टिकोण सकारात्मक बनेगा जबकि नकारात्मक प्रस्तुतिकरण से नकारात्मक दिशा में ही उनकी बुद्धि का विकास संभव होगा ।

अंग्रेजी और मातृभाषा की पाठ्यपुस्तकों, अनुपूरक पाठनसामग्री और बच्चों की पुस्तकों में स्त्री-पुरूष असमानता के अंशों को ढूंढ निकालने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अध्ययन कार्य किया गया है । स्त्री-पात्रों के चित्रण, लेखकों व लेखिकाओं की संख्या, स्त्री-पुरूष असमानताओं, नारी के प्रति पूर्वाग्रहों, सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों, लांछनों व निषेधाज्ञाओं, अक्षमताओं व अयोग्यताओं, पुरूष पर निर्भरता और चित्रों में प्रतिबिम्बित भेदभाव पर ध्यान केन्द्रित करते हुए 500 पुस्तकों को जांचा गया । अध्ययन के दौरान लेखक के सामान्य दृष्टिकोण, पुस्तक की भाषा एवं उद्देश्य को रेखांकित करते हुए संपादक की टिप्पणी पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया । कुछ स्थानों पर स्थिति चौंका देने वाली थी । पर एक बात सुनिशिचत थी: प्रकाशक नारी के सापेक्ष महत्व के प्रति सचेत नहीं थे । यह दृष्टिकोण बहुत

नया है । पाठ्यसामग्री के रचयिता धीरे धीरे इसके अभ्यस्त हो रहे हैं । भारत सरकार इन गल्तियों को सुधारने और क्षति को पूरा करने का पूरा प्रयास कर रही है ।

जी हां,मैं इसे "क्षति"ही कहूंगी, पर एक ऐसी "क्षति" जिसकी पूर्ति की जा सकती है । आज के परिवर्तित सामाजिक और राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में नारी की स्थिति, समानता और क्षमता के प्रति जागरूकता लाना आवश्यक हो गया है । इसके लिए हमें समाज में महिला की बहुआयामीय भूमिका को दृष्टिगत करते हुए स्त्री-पुरूष दोनों के रूख में परिवर्तन लाना होगा , हालांकि पुस्तक विशेष में उल्लिखित नकारात्मक और सकारात्मक दोनों ही पहलुओं पर हमें विचार करना होगा । प्रश्न है: "यह कैसे किया जाए ?"

मैंने बचपन में एक कविता पढ़ी थी:

**Sugar and Spice and every thing nice**
**That's what little girls are made of,**
**Frogs and Snails and puppy dog tails**
**That's what little boys are made of."**

इसे पढ़कर मुझे बहुत खुशी हुई थी । मुझे लगा था, मैं अपने भाई से अच्छी हूं, कुछ विशेष हूं । मेरा यह विचार क्षणभंगुर था क्योंकि मेरी दादी जब तब मुझे एहसास कराती रहती थीं कि मैं एक लड़की हूं । मुझे लड़कियों जैसा आचरण करना चाहिए। मुझे खाना बनाना, कपड़े धोना, झाड़ू पोंछा लगाना आना चाहिए- जो मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं था। वे पिताजी से भी कहती रहती:



"लड़कियों का पालन-पोषण लड़कियों के समान ही होना चाहिए।" इस सबका निष्कर्ष यही है कि घर का वातावरण, संस्कृति सामाजिक परम्परा एवं रीति-रिवाज समाज में लड़की या स्त्री की स्थिति के निर्णायक हैं ।

लेकिन इस सन्दर्भ में पाठ्यपुस्तकों अथवा बाल साहित्य से क्या अपेक्षा की जा सकती है ? अगर हम नारी की भूमिका का विश्लेषण करते हैं तो हमें उनसे क्या आशा-अपेक्षा करनी चाहिए? सबसे पहले हमें "स्त्री-पुरूषवाद" की व्याख्या करनी होगी । मूलतः यह शब्द "स्त्री-पुरूष असमानता" का द्योतक रहा है। नारी के प्रति सामाजिक पूर्वाग्रहों का आभास दिलाता आया है, यद्यपि व्यापक अर्थ में आज यह शब्द मनमाने ढंग से स्त्री-पुरूष की रूढ़िबद्ध भूमिका का संकेत देता है ।

आजकल नारी की पारम्परिक रूढ़िबद्ध भूमिका और उसकी शारीरिक व मानसिक क्षमता के प्रति समाज की धारणा में परिवर्तन आ रहा है, यद्यपि अभी भी बड़े पैमाने पर पाठ्यपुस्तकों व पाठ्य सामग्री में नारी की दीन-हीन दशा प्रतिबिम्बित होती है । दिन प्रतिदिन बढ़ती सामाजिक जागरूकता, संवैधानिक व्यवस्था और इस दिशा में शासन के प्रयास तभी सफल हो सकते हैं जबकि पाठ्यपुस्तकों में स्त्री-पुरूष असमानता को समाप्त कर दिया जाए क्योंकि बच्चे पर इसका उसकी कच्ची उम्र में गहरा असर पड़ता है ।

स्पष्टतः वर्तमान पाठ्यपुस्तकों का हमें इस दृष्टि से मूल्यांकन करना होगा । उन्हें जांचना-परखना होगा कि उनमें कहीं नारी

की छवि को विकृत बनाने वाले अंश तो नहीं हैं। कई बार देखा गया है, पद्य या गद्य, जो ऊपर से ठीक-ठाक लगता है उसका निहितार्थ गंभीर हो सकता है । इसलिए पाठ्यपुस्तकों का निम्नलिखित पहलुओं से मूल्यांकन आवश्यक है :

(क) विषयवस्तु में स्त्री-पुरूष असमानता

(ख) विषयवस्तु में स्त्री-पुरूष के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध ।

## II. नकारात्मक पहलुओं के मूल्यांकन के मानदंड

### I. भेदभाव

पाठ्यसामग्री में स्त्री-पुरूष भेदभाव या असमानता का कारण सामाजिक पूर्वाग्रह, महिला के प्रति लोगों का रवैया और स्वयं उसके द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका है । विभिन्न स्तरों पर नारी के प्रति अपनाया जाने वाला नकारात्मक रवैया भी इसके लिए उत्तरदायी है । पाठ्यसामग्री की विषयवस्तु, भाषा और प्रस्तुतीकरण में इस प्रकार का भेदभाव दृष्टिगोचर हो सकता है । इस प्रकार के अंश लेखकों और शिक्षकों के उपयोग के लिए रेखांकित किए जाने चाहिएं ।

#### (क) विषयवस्तु

पुस्तक के पाठों/अध्यायों की विषयवस्तु में महिलाओं को लेकर जहां स्थिति असंतुलित हो सकती है,वहां यह भी संभव है कि महिलाओं से जुड़े विषयों पर कम जोर दिया गया हो, पुरूषों



की तुलना में महिला पात्रों की संख्या अपेक्षाकृत कम हो । हालांकि ऐसी महिला-नेताओं और वीरांगनाओं, आविष्कर्ताओं और विशेषज्ञों की कमी नहीं है जिन्होंने विज्ञान, चिकित्सा, विधि, व्यापार, राजनीति, नागरिकशास्त्र, अर्थनीति, साहित्य, कला, खेलकूद और अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया है, तो क्यों न महिलाओं की उपलब्धि को भी उजागर किया जाए ?

पुस्तक के प्रत्येक पाठ/अध्याय का मूल्यांकन करते समय हमें देखना होगा कि सभी पाठों में महिलाओं की स्थिति संबंधी सामग्री को समुचित स्थान दिया गया है अथवा नहीं ।

#### (ख) भाषा तत्व

विषयवस्तु की अभिव्यक्ति भाषा से होती है । भाषा संबंधी पाठ्यपुस्तकों में भाषा प्रमुख होती है और विषय गौण । वहां विषय सिर्फ माध्यम होता है । विभिन्न शब्दों और व्याकरण के विभिन्न नियमों के ताने-बाने में विभिन्न स्तरों, अवसरों और व्यक्तियों के अनुरूप विचार या कल्पना को गूंथा जाता है जो किसी व्यक्ति या वस्तु विशेष के प्रति लेखक के रवैये को स्पष्ट करते हैं । शब्दों, मुहावरों आदि के प्रयोग द्वारा लेखक एक व्यक्ति के प्रति उपेक्षा, घृणा, अपमान आदि व्यक्त कर सकता है । नारी के संदर्भ में भी इस प्रकार के शब्दों या मुहावरों का प्रयोग हो सकता है जिससे उसकी स्थिति को ठेस पहुंचे।उदाहरणार्थ यदि कहा जाये कि "स्त्री होते हुए भी झांसी की रानी ने वीरता का परिचय दिया --------"तो इस प्रकार की भाषा को प्रयोग किसी भी महिला की क्षमताओं

के लिए अपमानजनक कहा जा सकता है । अभिव्यक्ति - चाहे वह लाक्षणिक हो या अलाक्षणिक - उसमें अगर स्त्री की छवि को विकृत किया जाता है तो उस अंश को वहां से हटाया जाना चाहिए । महिला की छवि को बिगाड़ने वाली और उसके स्तर को नीचा दिखाने वाली विषयवस्तु को भी हमें ढूंढ निकालना होगा और उसमें सुधार लाना होगा । यह सच है कि साहित्य की भाषा का दायरा सीमित नहीं किया जा सकता पर पाठों को चुनते, निर्धारित या तैयार करते समय कम से कम इतना तो ध्यान रखा जा सकता है कि महिला की छवि बिगड़ने न पाए । लेखकों के मार्गनिर्देशन के लिए नमूने के तौर पर कुछ सामग्री भी तैयार की जा सकती है ।

**(ग) सामग्री का प्रस्तुतीकरण**

किसी भी विषय की प्रस्तुति हम भाषा की सहायता से करते हैं और प्रस्तुति का अपना विशेष ढंग होता है जिससे हम जो कुछ कहना चाहते हैं वह स्पष्ट हो सके । इसका अर्थ यह हुआ कि प्रस्तुतीकरण का विशेष महत्व है और मूल्यांकन के समय उस पर ध्यान दिया जाना चाहिए । प्रस्तुतीकरण में व्यक्ति की छवि को बनाया या बिगाड़ा जा सकता है अतः हमें प्रत्येक पाठ को यह देखने के लिए बड़े ध्यान से पढ़ना होगा कि वहां स्त्री पात्रों का चित्रण ठीक से हुआ है या नहीं क्या वहां नारी की केवल रूढ़िवादी छवि ही तो नहीं दिखाई देती ? उदाहरणार्थ क्या वह घर के काम में व्यस्त, रसोईघर में खाना बनाने में उलझी हुई, रूखा-सूखा खाकर त्याग की प्रतिमूर्ति बनी हुई ही तो दिखाई नहीं पड़ती ? अगर हां तो



उसमें सुधार लाने के लिए हमें क्या करना होगा और कैसे करना होगा ।

**2. स्त्री-पुरुष असमानता के क्षेत्रः**

जीवन की विभिन्न राहों पर नारी की भूमिका को माता-पिता, परिवार के अन्य सदस्यों, सास-ससुर, समाज, और आश्चर्य तो यह है कि स्वयं महिला द्वारा ठीक से समझा और सराहा नहीं गया है । कारण हैः नकारात्मक रवैया । इसीलिए सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और शैक्षणिक क्षेत्र में महिला की महत्वपूर्ण भूमिका को कम महत्व दिया जाता है । आज भी लड़की को परिवार में बोझ समझा जाता है, शारीरिक श्रम के लिए अक्षम माना जाता है और उसके साथ दूसरे दर्जे के नागरिक जैसा व्यवहार किया जाता है ।

**3. सामाजिक बुराइयांः**

समाज में प्रचलित अधिकांश बुराइयों में पुरुष का महिला के प्रति पूर्वाग्रहित रवैया प्रतिबिम्बित होता है । दहेज प्रथा और वेश्यावृत्ति जैसी कुरीतियां समाज के लिए कलंक हैं और राष्ट्र की प्रगति में बाधक । इससे स्पष्ट हो जाता है कि लड़की आज भी एक बिकाऊ चीज़ है जो पुरुष की इच्छा पर बेची और खरीदी जाती है ।

**4. रूढ़िवादी विचारों की संबद्धताः**

विधवा और विधुर, या अविवाहित स्त्री और अविवाहित पुरुष,

के साथ समाज जिस तरह पेश आता है उसमें दो भांति की नीतियाँ स्पष्ट है । एक विधुर और विधवा के बीच तथा एक अविवाहित युवती और अविवाहित पुरूष के बीच जैसे एक खाई सी खोद दी जाती है । जहां अविवाहित युवती को लोग प्रायः हेय दृष्टि से देखते हैं, वहां अविवाहित युवक को सदा-बहार समझा जाता है । इसी प्रकार बांझ स्त्री के साथ किया जाने वाला व्यवहार भी कम निन्दनीय नहीं । उस समय यह ध्यान नहीं दिया जाता कि इसमें दोष उस स्त्री का ही न होकर पुरूष का भी हो सकता है । कलंक, कुरीतियां और रूढ़िवादी विचार समाज की प्रगति के बाधक हैं । ये भ्रामक हैं..... बहुत से लोग सोचते हैं कि ये मात्र विचार हैं । वे भूल जाते हैं कि इससे और भी कई चीजें जुड़ी हैं । कलंक, कुरीतियां या रूढ़िवादी विचार वस्तुतः कच्चे धागे से बुने एक जाल के समान हैं । अगर आप उसे तोड़ें, तो तोड़ सकते हैं और उससे मुक्त हो सकते हैं । पाठ्यपुस्तकों में इस प्रकार के सभी अंशों को हमें ढूंढ निकालना है और विशेष रूप से रेखांकित करना है ।

**5. अक्षमता और असमर्थता:**

आज भी यह समझा जाता है कि महिला जीवन के कई क्षेत्रों में पुरूष का मुकाबला करने में अक्षम है । आज भी यह माना जाता है कि वह अच्छी प्रबंधक भी नहीं हो सकती, हालांकि यह बात स्त्री-पुरूष दोनों के लिये समान रूप से लागू होती है। जहां एक और पुरूष भीरू और कमज़ोर हो सकता है, वहां दूसरी



और स्त्री अपनी सबलता, कर्मठता और बुद्धिमता का परिचय दे सकती है । इसलिए चाहे वह स्त्री हो या पुरूष, भेदभाव न्याय संगत नहीं । इस प्रकार के अंशों को ढूंढ निकालने के लिए हमें पाठों को ध्यानपूर्वक पढ़ना होगा ।

**6. पुरूष पर निर्भरता:**

आज भी समझा जाता है कि स्त्री आत्मनिर्भर नहीं हो सकती। वह स्वतंत्र रूप से स्वयं कोई निर्णय नहीं ले सकती । इस प्रकार के पूर्वाग्रहों को भी हमें पाठ्यपुस्तकों से निकालना होगा।

**7. चित्रांकन:**

यह आवश्यक है कि चित्र विषयवस्तु के अनुरूप हों, विषयवस्तु को समझाने व स्पष्ट करने में सहायक हों, उसके पूरक हों, और उसे उभारने वाले हों । महिलाओं के चित्र "श्रृंगार की वस्तु" नहीं अपितु गौरवपूर्ण होने चाहिएं । चित्र वास्तविक व सोद्देश्य होने चाहिएं ।

**III. नकारात्मक पक्ष के मूल्यांकन के मानदण्ड:**

**1. योग्यता:**

आज महिलाओं ने यह दिखा दिया है कि वे शारीरिक और बौद्धिक दृष्टि से पुरूष से कम नहीं । वे पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर

आगे बढ़ सकती हैं । वे भी बड़ी कुशलता से प्रशासन, प्रबंध या नेतृत्व कर सकती है । हालांकि बहुत सी महिलाएं गृहिणी या शिक्षिका जैसे पारम्परिक कार्य ही पसंद करती हैं पर इसका मतलब यह नहीं कि स्त्री की भूमिका उन्हीं तक सीमित कर दी जाए । अगर चिकित्सा, इंजीनियरिंग और वास्तुकला आदि जैसे व्यवसायों में हमें महिलाओं की योग्यता के उदाहरण मिलते हैं तो रिपोर्ट में उनका उल्लेख किया जाना चाहिए ।

**2· समान अवसर और समान वेतनः**

सामान्य रूप से संविधान में महिलाओं को अपने व्यक्तित्व के विकास के समान अवसर प्रदान करने का प्रावधान है जिससे वे समान कार्य के लिए समान वेतन पाने की अधिकारिणी बन सकें । भारत के संविधान में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जाति, धर्म और लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा । फिर भी व्यवहारिक रूप में यह भेदभाव हमें सर्वत्र दिखाई देता है । अतः पाठ्यपुस्तकों में सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, व्यावसायिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में जहां कहीं भी महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने का उल्लेख हो उसे रेखांकित किया जाना चाहिए ।

**3· स्वावलम्बनः**

नारी स्वावलम्बी हो सकती है । वह बिना किसी सहारे के अपने पैरों पर खड़ी हो सकती है । ऐसे कई उदाहरण हमें मिलते हैं, जहां उसने घोर संघर्ष कर अपने स्वावलम्बन, आत्मविश्वास



और आत्मसम्मान को प्रमाणित कर दिया है और दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनकर दिखा दिया है । पुस्तक का मूल्यांकन करने वाले को पुस्तकों में इस प्रकार के उदाहरण ढूंढने और रेखांकित करने चाहिए ।

**4· भावात्मक संबंधः**

स्त्री का भावात्मक पक्ष बहुत सबल होता है । वह अपने परिवार के लिए हंस कर सब कष्ट सह लेती है । वह अपनी भावनाओं की डोर से अपने परिवार के साथ बंधी है। इसीलिए वह अपने प्रियजनों के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देती है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाए। यह नारी का एक अनूठा गुण है - इसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है ।

**5· पारस्परिक सहयोगः**

परिवार समूचे समाज का एक अभिन्न अंग है । अतः परिवार और समाज की उन्नति पारस्परिक सहयोग, स्नेह और एकता की भावना पर निर्भर है । पारिवारिक और सामाजिक मामलों से संबंधित प्रश्नों को दोनों को मिलजुल कर हल करना चाहिए और अपने उत्तरदायित्वों को निभाना चाहिए । अगर दोनों मिलकर एक दूसरे से विचार विमर्श करने के बाद कोई निर्णय लेते हैं तो सफलता के अवसर बढ़ जाते हैं ।

**6· रूढ़िवादी एवं सामाजिक बुराइयों का परिहार:**

महिला के प्रति पारम्परिक दृष्टिकोण, विधवा और बांझ स्त्री पर लगाए जाने वाले लांछन और पुनर्विवाह की अस्वीकृति जैसे कृत्यों की भर्त्सना की जानी चाहिए । अगर पाठ्यपुस्तकों में ऐसे प्रयास किए गए हैं, तो उन्हें रेखांकित किया जाना चाहिए।

**7· महिलाओं की स्थिति सुधारने में महिलाओं का योगदान:**

महिलाएं अपनी समस्याएं स्वयं सुलझाने में उल्लेखनीय योगदान दे सकती हैं । यदि पाठ्यपुस्तकों में ऐसी स्त्रियों के उदाहरण दिए गए हैं जिन्होंने नारी के उत्थान और कल्याण के क्षेत्र में और विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से समाज सुधार में उल्लेखनीय काम किया है तो उन्हें भी नोट किया जाना चाहिए ।

**8· प्रेरणा की स्रोत - नारी:**

ऐसी महिलाओं की भी कमी नहीं है जो अपने पति और बच्चों के लिए प्रेरणा की स्रोत बनी है । ऐसा किसी भी सामान्य व्यक्ति के जीवन में घटित हो सकता है, और होता है । ऐसे उदाहरणों को भी नोट किया जाना चाहिए ।

**9· स्नेह और त्याग की प्रतीक - नारी:**

ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं जहां नारी ने सामने आकर अपने पति और बच्चों के लिए, अपने समाज और राष्ट्र के लिए



अपना बलिदान किया है । ऐसे उदाहरण भी सराहनीय हैं।

**10· महिलाओं का समुचित प्रस्तुतीकरण:**

पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं का समुचित मात्रा में समुचित प्रस्तुतीकरण आवश्यक है । लेखिकाओं को समुचित स्थान मिलना चाहिए। स्त्री का चित्रण ऐसा होना चाहिए जिसमें उसके स्वावलम्बी, आत्मनिर्भर और आत्म निर्णायक होने का आभास हो । ऐसे उदाहरण नोट किए जाने चाहिए और रिपोर्ट में उनका उल्लेख किया जाना चाहिए ।

**4· निष्कर्ष:**

हम प्राय: देखते हैं कि कक्षा में शिक्षकों की लड़कों और लड़कियों दोनों से भिन्न आशाएं-अपेक्षाएं होती हैं । सामान्य रूप से लड़कियों से आशा की जाती है कि वे सब कुछ चुपचाप मान लें जबकि लड़कों के शारीरिक दृष्टि से आक्रामक होने की अपेक्षा होती है । रूढ़िवादी धारणा अविवादास्पद है ------ इसके अनगिनत उदाहरण आपको मिलेंगे । इन्हें बढ़ावा देने वाला रवैया स्कूल के पाठ्यक्रम, पुरूष के इर्द-गिर्द घूमने वाले ऐतिहासिक वृतान्त, पाठ्यपुस्तकों, पाठ्यसामग्री और भौतिक गतिविधियों में भी प्रतिबिम्बित होता है । हमारे बच्चे स्त्री-पुरूष में भेदभाव से रहित शिक्षा से वंचित है जिसकी आजकेसमाज को आवश्यकता है ।

यह निर्विवाद है कि:

"---------स्त्री-पुरूष असमानता को मिटाने में पाठशालाओं की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। उनके हल्के से हस्तक्षेप का बच्चों और किशोरों की रूढ़िबद्ध धारणा पर अमिट प्रभाव पड़ सकता है --------। पाठशालाएं समाजीकरण का एक माध्यम हैं जिनकी स्त्री-पुरूष असमानता को तुरन्त मिटाने में प्रमुख भूमिका हो सकती है ।"

---

1. गुटेनटाग एट अल. :अनडुइंग दि सैक्स स्टिरियोटाइप्स, रिसर्च एण्ड सोर्सेस ऑफ एजूकेशन, मैक ग्रिठ हिल, 1976, पृ0 94-95.



अध्याय - 2

# मूल्यांकन उपकरण निर्देशिका

## मूल्यांकनकर्ताओं के लिए निर्देश

### 1. भूमिका : भाषा एवं लिंग-भेद

यह "मूल्यांकन उपकरण" नारी के सापेक्ष महत्व को दृष्टिगत करते हुए स्कूल की सभी कक्षाओं की भाषा संबंधी पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन करने के लिए तैयार किया गया है। इसका उद्देश्य यह देखना है कि पाठ्यसामग्री में बालिका और नारी का सही चित्रण किया गया है या नहीं । अगर नहीं, तो इसका लक्ष्य उन वाक्यों, अंशों, अनुच्छेदों, प्रसंगों और निष्कर्षों को परिवर्तित करने के सुझाव देना है जो नारी को उनकी घिसी-पिटी भूमिका में प्रस्तुत करते हैं और देश में उसकी छवि को हानि पहुंचाते हैं । इस मूल्यांकन का उद्देश्य पुस्तक को नकारने या उसके गुणगान का नहीं है अपितु स्त्री-पुरूष असमानता को, अगर कहीं है तो, समाप्त करना है ।

पाठ्यपुस्तकों में ऐसे अंश भी हो सकते हैं जो समाज में नारी का नाम ऊंचा करते हैं और उनके महत्वपूर्ण योगदान व उपलब्धि का बखान करते हैं । ये अंश छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकते हैं ।

पाठ्यपुस्तकों में नारी की भूमिका का बहुधा समुचित चित्रण नहीं किया जाता । इस प्रकार की सामग्री में कई बार नारी का जो चित्र उभर कर सामने आता है उसमें हम उसे परम्परागत रूप से घर का सारा काम करने वाली गृहिणी, "सम्भोग की वस्तु" या बहुत ही मामूली सी भूमिका में देखते हैं । उसके

घर के काम को काम नहीं समझा जाता । गांव के एक व्यक्ति के साथ हुए इस वार्तालाप से यह बात स्पष्ट हो जाती है:

"तुम्हारी पत्नी काम करती है ?"

"नहीं, वह घर में रहती है ।"

"अच्छा, तो फिर दिन भर क्या करती है ?"

"बस, यही कोई सुबह चार बचे उठकर कुएं पर पानी भरने चली जाती है, उसके बाद लकड़ी वगैरह का जुगाड़ कर आग जलाती है और बच्चों के खाने के लिए कुछ बनाती है । वह पंसारी के यहां से खाने-पीने की चीजें लाकर हम सबके लिए खाना बनाती है । उसके बाद वह कपड़े धोने नदी पर चली जाती है ।"

"तुम दोपहर को खाना खाने घर आते हो ?"

"नहीं । वह खाना लेकर खेत पर आ जाती है। हम इकट्ठे खाते हैं । हमारे खेत बस घर से यही कोई दो किलोमीटर होंगे ।"

"उसके बाद वह घर जाकर थोड़ा आराम करती होगी ?"



"नहीं, उसे गाय-भैंस का काम भी तो करना होता है । बच्चों को देखना होता है । मेरे घर पहुंचने से पहले शाम का खाना बनाना होता है।"

"खाने के बाद सोने चली जाती होगी ?"

"नहीं, सोने से पहले बर्तन मांजती है, साफ-सफाई करती है । रात में सोने से पहले उसका सोना नहीं होता ।"

"और तुम कहते हो, तुम्हारी घर-वाली काम नहीं करती ।"

"नहीं, मैंने तुम्हें बताया न, वह घर पर ही रहती है ।"

ऐसे पूर्वाग्रहित सामाजिक दृष्टिकोण को बदलना कोई आसान काम नहीं । परिवर्तन के लिए हमें उन प्रक्रियाओं और प्रयासों को दूसरी दिशा में मोड़ना होगा जो सदियों से इस दिशा में किए जा रहे हैं । स्त्री-पुरुष समानता के लिए अनुकूल वातावरण बनाना होगा, समानता को तोड़ने वाले तत्वों को जड़मूल से उखाड़ फेंकना होगा और इसके साथ ही उन तत्वों को उभारना होगा जो इसके पक्ष में हैं ।

**2· मूल्यांकन उपकरण:**

अक्षर बोध के पश्चात् बच्चे का परिचय पाठ्यपुस्तकों और बाल-साहित्य से होता है । इस कच्ची उम्र में हम उनके हृदय में जो बीज बोएंगे, वही आगे चलकर अंकुरित होगा और फूल बनकर महकेगा । यही अवस्था है जबकि उनके भोले-भाले निष्पक्ष मनमानस को शुद्ध ताज़ी हवा की जरूरत है । इसके लिए आवश्यक है कि भाषा संबंधी पाठ्यसामग्री को नारी के संदर्भ में जांचा और परखा जाए । वर्तमान "मूल्यांकन उपकरण" इसी उद्देश्य से तैयार किया गया है ।

इस उपकरण में है:

1· पुस्तक परिचय
2· पाठ-दर-पाठ मूल्यांकन
3· नकारात्मक पहलुओं को ढूंढ निकालना
4· सकारात्मक पहलुओं को ढूंढ निकालना
5· पुस्तक का व्यापक मूल्यांकन
6· मूल्यांकनकर्ता का परिचय

**3· निर्देश पुस्तिका:**

**1· सामान्य निर्देश:**

§क§ "क्षतिपूर्ति" शीर्षक के अन्तर्गत मूल्यांकन-मानदंड को ध्यान से पढ़िए ।

§ख§ पुस्तक का पूरा ब्योरा दीजिए ।



§ग§ एक पुस्तक के लिए एक ही कार्ड का प्रयोग कीजिए ।

§घ§ अब आपको एक एक पाठ/अध्याय का मूल्यांकन करना है । अभ्यास माला सहित प्रत्येक पाठ/अध्याय के लिए एक अलग पन्ना लीजिए और मूल्यांकन के मानदण्डों को ध्यान में रखकर निर्देश पुस्तिका में दिए गए क्रम से जहां कहीं विसंगति हो, वहां अपनी टिप्पणी/समीक्षा और सुझाव, विशेष विस्तार से संबद्ध स्थान पर लिखें ।

§ङ§ पुस्तक के सभी पाठों/अध्यायों का मूल्यांकन कर लेने के पश्चात् पुनः मूल्यांकन उपकरण पर दृष्टिपात करें । नकारात्मक और सकारात्मक पहलुओं के अन्तर्गत पूरी पुस्तक के बारे में संबद्ध जानकारी दें जिससे एक ही दृष्टि में पुस्तक का पूर्ण चित्र उभरकर सामने आ जाए ।

§च§ और अब आपको पुस्तक का व्यापक मूल्यांकन करना है । कहां क्या भरना है यह नम्बर नौ को छोड़कर अन्य सब स्थानों पर स्पष्ट है । नम्बर नौ के सामने आपको अभ्यासमालाओं, पाठ्यक्रम से संबंधित और अतिरिक्त गतिविधियों द्वारा नकारात्मक पहलुओं को नकारने के

लिए शिक्षकों के मार्गनिर्देशन हेतु ठोस सुझाव देने हैं ।

§छ§ नारी की प्रतिष्ठा, समानता और शक्ति व क्षमता के अनुरूप मूल्यों को उभारने वाले सुझाव शिक्षक एवं लेखक दोनों के लिए हैं, इसलिए उनका विशेष विवरण देना आवश्यक है ।

§ज§ अपना संक्षिप्त परिचय देकर हस्ताक्षर कीजिए और पूरा पता लिखिए ।

§झ§ अन्त में प्रत्येक कार्ड पर विशेषज्ञ के हस्ताक्षर लीजिए ।

**2· पाठ-दर-पाठ मूल्यांकनः**

जैसा कि ऊपर §घ§ में कहा गया है, प्रत्येक पाठ/अध्याय ध्यान से पढ़िए । अगर कहीं कोई नकारात्मक पहलू है तो उस अंश के पहले व अंतिम शब्दों का उल्लेख करते हुए उसे नोट कीजिए । पृष्ठ व पंक्ति संख्या देना न भूलें ।

अगर आपकी कोई टिप्पणी है तो संबद्ध स्तम्भ में भरें । परिवर्तन के लिए अगर आप कोई सुझाव देना चाहते हैं तो उसका विशेष रूप से उल्लेख करें क्योंकि यह लेखक के लिए सहायक होगी।



शिक्षकों के लिए आपके सुझाव प्रश्नों, अभ्यासमालाओं, पाठ्यक्रमीय और पाठ्यतेर गतिविधियों द्वारा नकारात्मक पहलुओं को नकारने पर आधारित हो सकते हैं । एक या दो उदाहरण दें । जैसेः "मैं राम हूं । रानी मेरी बहन है । राजू मेरा भाई है । मैं पढ़ रहा हूं । राजू खेल रहा है । पिताजी दफ्तर जा रहे हैं । मां खाना बना रही है । रानी कपड़े धो रही है।"

इसे पढ़कर लगता है कि "पढ़ना, खेलना और दफ्तर जाना" परिवार के पुरूषवर्ग का विशेषाधिकार है । इसे ऐसे भी लिखा जा सकता थाः "मैं राम हूं । रानी मेरी बहन है । राजू मेरा भाई है । हम स्कूल जा रहें । मां खाना बना रही है। पिताजी मेज़ लगा रहे हैं ।" यहां तीनों बच्चे स्कूल जा रहें अर्थात् "पढ़ना" सिर्फ लड़कों का अधिकार नहीं है। परिवार में लड़कियों के साथ सम-व्यवहार किया जाता है । इसके अलावा यहां एक और बात ध्यान देने योग्य है, वह यह कि पति-पत्नी का हाथ बंटा रहा है, जैसाकि होना चाहिए ।

यहां व्यक्तिगत प्रश्नों और अभ्यासमालाओं का सहारा भी लिया जा सकता है । शिक्षिका छात्रों से पूछ सकती है कि क्या वे घर के काम में अपनी मां का हाथ बंटाते हैं, जैसे बाज़ार से चीजें लाना, साग-सब्जी काटना, बिस्तर बिछाना, दूध लाना, मेज़ लगाना आदि । अगर नहीं तो शिक्षिका उन्हें ऐसा करने का प्रोत्साहन दे सकती है । इसी प्रकार सकारात्मक पहलुओं को ढूंढ निकालने के लिए पूरी पुस्तक ध्यान से पढ़िए ।

3· नकारात्मक पहलू:

पुस्तक के प्रत्येक पाठ का मूल्यांकन कर लेने के बाद नकारात्मक पहलू के सभी मूल्यांकन-बिन्दू "मूल्यांकन उपकरण" में स्थानान्तरित करें । स्त्री-पुरूष असमानता वाले जिन अंशों को पुस्तक में से निकाला जाना है उन्हें संख्या 6 के सामने लिखें । अगर आप कोई सुधार संबंधी सुझाव देना चाहते हैं तो उसे संख्या 7 के सामने लिखें ।

**4· सकारात्मक पहलू:**

मूल्यांकन की कसौटी और चैक-पॉइन्ट्स के अन्तर्गत आप सकारात्मक पहलू नोट कर चुके हैं । नकारात्मक पहलुओं के समान यहां भी अब आपको "मूल्यांकन-उपकरण" में संबद्ध जानकारी स्थानान्तरित करनी है । अगर आप किसी ऐसे विचार से टकराते हैं जो एकदम विशिष्ट है और जिससे नारी का नाम ऊंचा होता है तो उसे भी पृष्ठ संख्या सहित कॉलम 7 में लिखें ।

**5· व्यापक मूल्यांकन:**

निम्नलिखित बिन्दुओं पर अपने सुझाव दें और टिप्पणी लिखें:

§क§ लेखक/लेखिकाओं की संख्या, अध्याय/पाठों की कुल संख्या,

§ख§ पुस्तक में पुरूषों/स्त्रियों से संबंधित प्रसंगों की संख्या,



§ग§ पुरूष/स्त्री पात्रों की संख्या,

§घ§ पुस्तक में किन मूल्यों पर अधिक ध्यान दिया गया है ? क्या ये मूल्य स्त्री की स्थिति, समानता और शक्ति व क्षमता के अनुरूप हैं ?

§ङ§ क्या लेखक ने इन मूल्यों को उभारने के लिए किन्हीं विशेष युक्तियों का सहारा लिया है ? अगर हां तो उनका उल्लेख करें,

§च§ क्या लेखक ने स्त्री-पुरूष असमानता को मिटाने के लिए विशेष युक्तियों का प्रयोग किया है ? अगर हां तो उनका उल्लेख करें,

§छ§ पाठों और अभ्यासमालाओं में आए सकारात्मक पहलुओं की कुल संख्या का उल्लेख करें,

§ज§ क्या आप सोचते हैं कि पुस्तक में कुछ और सकारात्मक पहलू जोड़े जा सकते हैं ? अगर हां तो उनका उसी रूप में उल्लेख करें जैसाकि उन्हें पाठ/अभ्यासमाला में जोड़ा जाना चाहिए ।

(झ) नकारात्मक पहलुओं की कुल संख्या लिखें। उनका उसी प्रकार उल्लेख करें जैसे वे पाठों/अभ्यासमालाओं में दिए गए हैं,

(न) पुस्तक में पूर्वाग्रहों को समाप्त करने के लिए सुझाव दें, और

(ट) पुस्तक में मूल्यों को उभारने के लिए ठोस सुझाव दें ।

6. आपने पुस्तक का जो मूल्यांकन किया है उस पर विशेषज्ञ के साथ चर्चा करें, उसके द्वारा दिए गए सुझावों को नोट करें और उसके हस्ताक्षर करवाएं।

7. अन्त में "मूल्यांकन-उपकरण" पर हस्ताक्षर करें और अपना पता लिखें ।

**याद रखें, आपके द्वारा ढूंढा गया सिर्फ एक सकारात्मक पहलू भी एक अच्छी पुस्तक का आधार बन सकता है । अतः उसका उल्लेख करना न भूलें ।**



**परिशिष्ट**

परिशिष्ट-1

## भाषा संबंधी पाठ्यसामग्री को जांचने के लिए मूल्यांकन उपकरण

### 1. पुस्तक का विवरण

1. पुस्तक का नाम :

2. पुस्तक की भाषा :

3. (क) लेखक :
   (ख) संपादक :

4. मूल/अनूदित/रूपान्तरित/संकलित :

5. अनुवादक/रूपान्तरकार/संकलनकर्ता :

6. प्रकाशक (पूरा पता) :

## ।। आधारभूत जानकारी ।।

1. पृष्ठ संख्या :

2. सचित्र/चित्र रहित :

3. पुस्तकमाला (अगर हो) :

4. संस्करण : :

5. वर्तमान संस्करण का :
प्रकाशन वर्ष

6. मूल्य :



## ।।। नकारात्मक पहलू

| क्रम सं0 | नकारात्मक पहलू | अध्याय/ पाठ सं0 | पृष्ठ संख्या | पंक्ति से पंक्ति | हटाया जाना चाहिए | परिवर्तन के लिए सुझाव |
|---|---|---|---|---|---|---|

1. भेदभाव

क) विषयवस्तु

1. विषय संबंधी

2. भाषा संबंधी

ख) प्रस्तुतिकरण

2. स्त्री-पुरुष असमानता के क्षेत्र

क) सांस्कृतिक/सामाजिक पृष्ठभूमि

ख) पारम्परिक छवि/ अपेक्षित भूमिका/ स्त्री-पुरुष के संबंध में रूढ़िवद धारणा

ग) लड़की/नारी के साथ भेदभाव-पूर्ण व्यवहार

घ॰ सामाजिक बुराइयां:
दहेज, वधू-मूल्य,
वैश्यावृत्ति, बाल-
विवाह, गलत धाराणाएं

ड॰ लांछन/रूढ़िवादिता:
वैधव्य, बांझपन, शिक्षा
आदि

च॰ पुरूष पर निर्भरता:
अक्षमता, अयोग्यता

छ॰ चित्र: ग़लत प्रस्तुतीकरण
जैसे: वेशभूषा, रूपाकार,
स्थिति और भूमिका

ज॰ नकारात्मक आत्मबोध
आत्मविश्वास में
कमी/स्वयं को
दीन हीन
समझना ।



## 11/ सकारात्मक पहलू

| क्रम सं0 | सकारात्मक पहलू | अध्याय/ पाठ सं0 | पृष्ठ | पंक्ति से पंक्ति तक | विशिष्ट लक्षण | टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|---|---|

1. क्षमता/योग्यता

2. नेतृत्व/प्रशासन/
प्रबंध कुशलता

3. आत्मनिर्भरता/
सकारात्मक
आत्मबोध

4. अवसर/प्रतिफल/आर्थिक
प्रतिष्ठा/शक्ति

5. भावात्मक संबंध/
पारस्परिक सहयोग/
सहयोग/सहयोगी
व्यवहार

6. सामाजिक बुराइयां/
रूढ़िवादिता का उन्मूलन

7. नारी-प्रेरणा के स्रोत

8. स्वयं अपनी स्थिति
सुधारने का प्रयास

9. महिला पात्रों का
समुचित (मात्रा में)
प्रस्तुतिकरण

10. संवैधानिक और वैधिक
अधिकार

11. अन्य



-- व्यापक मूल्यांकन

1. अध्यायों/पाठों की संख्या:
लेखकों की संख्या:
(क) पुरुष
(ख) स्त्री

2. विषयों की संख्या:
(क) पुरुषों से संबंधित
(ख) स्त्रियों से संबंधित

3. पात्रों की संख्या
(क) पुरुष
(ख) स्त्री

4. उद्भासित मूल्य:
(क).....
(ख).....
(ग).....

5. स्त्री-पुरुष असमानता को मिटाने
के लिए उठाए जाने वाले कदम
(क)....
(ख)...
(ग)....

6. मूल्यों को उभारने के लिए उठाए जाने वाले कदम

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

7. पुस्तक में सकारात्मक पहलुओं की कुल संख्या

8. पाठों/अभ्यासमालाओं में समाहित किए जा सकने वाले सकारात्मक पहलुओं की कुल संख्या

9. पाठो/अध्यायों में नकारात्मक पहलुओं की कुल संख्या

10. स्त्री-पुरुष असमानता को मिटाने के लिए सुझाव ।

(क) ....  (ख) ....

(ख) ....

(ग) ....

11. पुस्तक में मूल्यों को उभारने के लिए सुझाव:

मूल्यांकनकर्ता के हस्ताक्षर

पता

विशेषज्ञ के हस्ताक्षर

पता:



## मूल्यांकनकर्ता का परिचय

1. नाम:

2. पद:

3. शैक्षकणक योग्यता:

4. व्यावसायिक योग्यता:

5. दफ्तर का पता:

6. घर का पता:

7. व्यावसायिक अनुभव:

8. विशेषज्ञता:

तिथि:  हस्ताक्षर

परिशिष्ट-2

-भाषा संबंधी पाठ्य सामग्री

के लिए

प्रीतपाठ मूल्यांकन पृष्ठ

स्त्री-पुरुष असमानता का उन्मूलन

पाठ संख्या एवं "शीर्षक.....

| क्रम | पृष्ठ एवं पंक्ति | टिप्पणी/समालोचना | परिवर्तन के लिए सुझाव |
|---|---|---|---|